गौतमबुद्ध प्राविधिक विश्वविद्यालय (जीबीटीयू) के 10वें दीक्षांत समारोह में 32 मेधावियों को गोल्ड व सिल्वर मेडल से नवाजा गया। गोल्ड मेडल पाने वाले 16 मेधावियों में 11 छात्राएं और सिल्वर मेडल पाने वाले 16 मेधावियों में 8 छात्राएं हैं। 57 शोधार्थियों को पीएचडी की उपाधि दी गई • हिन्दुस्तान

जीबीटीयू के दसवें दीक्षांत समारोह में ऐलान : जीबीटीयू और एमएमटीयू का विलय, फिर यूपीटीयू के नाम से जाने जाएंगे, छात्रों ने जताई खुशी

समारोह में वापस मिला पुराना गौरव

लखनऊ | कार्यालय संवाददाता

गौतमबुद्ध प्राविधिक विश्वविद्यालय (जीबीटीयू) का 10वां दीक्षांत समारोह यादगार हो गया। शनिवार को दीक्षांत समारोह के बीच में ही कैबिनेट के फैसले की जानकारी अधिकारियों को मिली। जिसके अनुसार अब गौतमबुद्ध प्राविधिक विश्वविद्यालय और नोएडा स्थित महामाया प्राविधिक विश्वविद्यालय (एमएमटीयू) का विलय करके एक कर दिया गया है। अब इसे फिर पुराने नाम उप्र प्राविधिक विश्वविद्यालय (यूपीटीयू) के नाम से ही जाना जाएगा। पुराना गौरव वापस होने की जानकारी मिलते ही दीक्षांत समारोह में उपस्थित छात्र भी खुशी से झूम उठे। कुलपति डॉ. आरके खण्डाल ने कहा कि यूपीटीयू को बेहतर ढंग से संचालित करना हमारे लिए चुनौती है। बेहतर व गुणवत्तापरक शिक्षा मिले इस पर ही हमारा फोकस है।

8 मई 2000 को एक्ट बनाकर उप्र प्राविधिक विश्वविद्यालय (यूपीटीयू) का गठन किया गया था। उस समय इस विश्वविद्यालय से संबद्ध प्रदेश भर में इंजीनियरिंग कॉलेजों की संख्या मात्र 49 ही थी। इसके बाद धीरे-धीरे कॉलेजों की संख्या में काफी बढ़ोत्तरी हुई। पूर्ववर्ती बसपा सरकार ने इस विश्वविद्यालय को दो भागों में विभाजित कर जीबीटीयू व एमएमटीयू के नाम पर दो विश्वविद्यालय बना दिए। एमएमटीयू नोएडा में है और जीबीटीयू राजधानी में। दोनों विवि उसी पुराने एक्ट के तहत चलाए जा रहे थे जो यूपीटीयू के लिए बना था। अभी दोनों विश्वविद्यालयों से संबद्ध तकनीकी कॉलेजों की संख्या 763 है। इसमें एमएमटीयू से संबद्ध कॉलेजों की संख्या अधिक है। अब फिर दोनों ही एक होकर यूपीटीयू के नाम से जाने जाएंगे।

गोल्ड मेडल पाने वाले मेधावियों के चेहरों पर चमकी खुशी • हिन्दुस्तान

किसानों के विरोध के कारण नहीं बन पा रहा भवन

जानकीपुरम में 32 एकड़ जमीन पर प्राविधिक विश्वविद्यालय की अपनी बिल्डिंग बन रही है। यह जमीन विवि प्रशासन ने एलडीए से खरीदी थी लेकिन अभी जमीन के कुछ हिस्से पर किसानों का कब्जा है और वे उचित मुआवजा न मिलने के कारण उसे खाली नहीं कर रहे। फिलहाल विवि प्रशासन ने बीती एक जनवरी को भी जिलाधिकारी से वार्ता की है, ताकि काम शुरू किया जा सके। जुलाई वर्ष 2011 में यहां काम शुरू हुआ था लेकिन अभी करीब बीस फीसदी काम ही हो पाया है। 50 करोड़ रुपए की लागत से यहां दस मंजिला एकेडमिक बिल्डिंग और आठ मंजिला एडमिनिस्ट्रेटिव बिल्डिंग बनेंगी। विवि अपने कैम्पस में एमटेक के कम से कम दस पाठ्यक्रम शुरू करेगा। अभी विवि से सिर्फ कॉलेज ही संबद्ध हैं वह खुद कोई पाठ्यक्रम नहीं चला रहा।

मेडल और शाबासी संग मेधावियों को दी नसीहत

लखनऊ | कार्यालय संवाददाता

दुनिया के सभी देशों में हथियारों को बनाने की होड़ लगी हुई है। हम कई दशक पूर्व हिरोशिमा में परमाणु बम गिरने का हश्र देख चुके हैं। युवाओं को चाहिए कि वह नकारात्मकता से बचते हुए अपने ज्ञान से समाज में उपेक्षित लोगों का कल्याण करें। यह विचार सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जीएस सिंघवी ने व्यक्त किए। वह शनिवार को गौतम बुद्ध प्राविधिक विश्वविद्यालय (जीबीटीयू) के दसवें दीक्षांत समारोह में उपस्थित छात्रों व शिक्षकों को संबोधित कर रहे थे।

कार्यक्रम में कुलाधिपति बीएल जोशी ने कहा कि जीबीटीयू बेहतर ढंग से अपने उद्देश्यों को पूरा करने में जुटा हुआ है। वैश्वीकरण के दौर में विदेशी शैक्षिक संस्थाओं के साथ तकनीकी ज्ञान के आदान-प्रदान पर जोर देना चाहिए।

जीबीटीयू के कुलपति डॉ. आरके खण्डाल ने कहा कि विश्वविद्यालय अब चैलेन्ज मूल्यांकन करवाने वाले छात्रों की कॉपियों को वेबसाइट पर जारी करेगा। हम सेण्टर ऑफ एक्सीलेन्स योजना के तहत आईईटी परिसर में बिल्डिंग मैटिरियल, जानकीपुरम में निर्माणाधीन विवि परिसर में नैनो टेक्नोलॉजी पर और आर्किटेक्चर कॉलेज में ग्रीन बिल्डिंग पर रिसर्च सेण्टर खोलेंगे।

इन्हें मिला गोल्ड मेडल

• आशीष वर्मा, निवेदिता सिंह, अंशू सिंह, कृति श्रीवास्तव, स्मिता गुप्ता, मनोज कुमार यादव, शलभ अग्रवाल, सोनम गुप्ता, अश्वनी कुमार सिंह, स्नेहा सेन, निकिता सारस्वत, आकांक्षा गुलाटी, राघव सागर टीपी सिंह, कनुप्रिया जैन, कृति मेहरोत्रा, वंदना वर्मा

इन्हें मिला सिल्वर मेडल

• युवराज आहूजा, पारिशा राना, विपुल बंसल, राज किशोर पाल, अर्शिता सिंघल, गौरव त्रिपाठी, सोनम शुक्ला, प्रशांत मिश्रा, हिमाक्षी गोयल, तनु गुप्ता, निक्की सिंघल, मोहम्मद फिरोज आलम, प्रीति सिंह, प्रीति त्यागी, मानव महान सिंह, शिल्पी माहेश्वरी

समाज के साथ सफलता बांटने का लिया संकल्प

लखनऊ | कार्यालय संवाददाता

आशीष वर्मा

राजकिशोर पाल

जीबीटीयू के दीक्षांत समारोह में सम्मानित होने वाले मेधावी अपनी सफलता समाज के वंचित तबकों के साथ बांटना चाहते हैं। विपरीत परिस्थितियों में लक्ष्य के प्रति समर्पण की भावना ने ही इन्हें यह मुकाम हासिल करवाया जिसके लिए यह संघर्ष कर रहे थे। अब हाथ में डिग्री और मेडल लेकर इन मेधावियों ने संकल्प लिया है कि गरीबों को पढ़ाई में मदद देंगे और ऐसे छात्र जो कैरियर को लेकर भ्रमित हैं उन्हें सही मार्गदर्शन देंगे।

कमला नेहरू इंजीनियरिंग कॉलेज के आशीष कुमार वर्मा ने बीटेक सिविल इंजीनियरिंग में गोल्ड मेडल हासिल किया है। इनके पिता स्व. वीएस वर्मा प्राइवेट ट्यूशन पढ़ाते थे। आर्थिक तंगी में पले-बढ़े इस मेधावी को जब मंच पर सम्मानित किया गया तो इसकी आंखों में खुशी चमक उठी। बोला पिता जी की मौत के बाद मां और नाना ने किस तरह मुझे पढ़ाया मैं ही जानता हूं। संघर्ष करके आगे बढ़ा हूं इसलिए अपने फतेहपुर में बिंदकी स्थित गांव बैरागी खेड़ा में एक स्कूल व अस्पताल बनवाऊंगा। इस समय एनटीपीसी में इन्हें असिस्टेंट मैनेजर की जॉब मिली है और यह अभी प्रोबेशन पीरियड पर हैं।

उरई के राजकिशोर पाल ने बीटेक इन्स्ट्रूमेन्टेशन इंजीनियरिंग में सिल्वर मेडल हासिल किया है। इनके पिता सोम सिंह पाल वार्ड ब्वॉय हैं। यह कहते हैं कि बीटेक की डिग्री लेकर तमाम छात्र नोएडा व एनसीआर में बहुत कम वेतन पर नौकरी करने को मजबूर हैं। सरकार को चाहिए कि वह यहां के युवाओं को यहीं नौकरी मिले, इसके लिए व्यवस्था करे। मैं विदेश नहीं जाऊंगा और खुद का उद्यम स्थापित करके गांव के गरीब लोगों को नौकरी दूंगा।

बीटेक टेक्सटाइल में गोल्ड मेडल हासिल करने वाली सोनम गुप्ता के पिता संजीव कुमार परिवहन निगम में कंडक्टर हैं। वह कहती हैं कि समाज में बदलाव लाने के लिए मानसिकता बदलना जरूरी है। समाज के कमजोर तबकों के कल्याण की जिम्मेदारी सरकार के साथ-साथ पढ़े-लिखे लोगों को भी उठानी होगी। तभी देश मजबूत बनेगा।

मेधावी बोले, महिलाओं की सुरक्षा के लिए सख्त कानून बनाने और समाज की मानसिकता बदलने की जरूरत

लखनऊ | कार्यालय संवाददाता

दिल्ली में हुए गैंगरेप के बाद महिलाओं की सुरक्षा के लिए सख्त से सख्त कानून बनाए जाने की मांग हो रही है। गौतमबुद्ध प्राविधिक विश्वविद्यालय (जीबीटीयू) के 10वें दीक्षांत समारोह में सम्मानित मेधावियों का भी कहना है कि सख्त कानून बनाया जाए और कानून को पूरी मजबूती के साथ लागू किया जाए। प्रस्तुत है मेधावियों से बातचीत :

अगर सरकार महिलाओं की सुरक्षा के प्रति संजीदा है तो उसे बलात्कार करने वालों को फांसी की सजा देनी होगी। सख्त कानून हो तभी लोग महिलाओं से बदसलूकी करने से घबराएंगे।

कृति मेहरोत्रा, गोल्ड मेडलिस्ट बीआर्क, बीबीडी एनआईटीएम

सभी राजनीतिक दलों को इस मुद्दे पर एकजुट होकर सख्त कानून बनाने पर जोर देना चाहिए। बलात्कार के मामलों में 30-30 साल तक सजा न मिलना गलत है।

कृति श्रीवास्तव, गोल्ड मेडलिस्ट बीटेक इन्स्ट्रूमेंटेशन इंजीनियरिंग, श्री राम स्वरूप इंजीनियरिंग कॉलेज

लोगों की सोच में बदलाव लाना बहुत जरूरी है। स्कूली के पाठ्यक्रम में महिलाओं की सुरक्षा और अपराध विषय को शामिल किया जाए। ताकि बचपन से ही लड़कियों को अपने हक के बारे में पता चल सके।

अंशू सिंह, गोल्ड मेडलिस्ट, बीटेक इलेक्ट्रिकल इंजी., बीबीडी एनआईटीएम

बड़े ही दुःख की बात है कि पढ़े-लिखे होने के बावजूद समाज में महिलाओं को गलत नजर से देखा जाता है। हमें अपने नजरिए को बदलना होगा। बलात्कारियों को फांसी दी जानी चाहिए।

स्नेहा सेन, गोल्ड मेडलिस्ट, बीटेक केमिकल इंजीनियरिंग, मेरठ

महिलाओं की सुरक्षा के लिए प्रभावी कानून बने और उसके क्रियान्वयन पर जोर दिया जाए। लचर जांच न हो इसके लिए कड़े उपाय किए जाएं और मामले की सुनवाई प्राथमिकता पर हो।

मनोज कुमार यादव, गोल्ड मेडलिस्ट बीटेक मैकेनिकल, बीबीडी एनआईटीएम

महिलाएं अपनी सुरक्षा के लिए स्वयं सहायता समूह बनाएं। जो पुरुष बदसलूकी करे उसे सभी महिलाएं मिलकर सजा दें और पुलिस के हवाले कर दें। अब बदले जमाने में हमें सबला बनना ही होगा।

स्मिता गुप्ता, गोल्ड मेडलिस्ट बीटेक इलेक्ट्रानिक्स इंजीनियरिंग ग्रुप